

शब्द-भंडार और शब्द-निर्माण

भाषा में शब्द का विशिष्ट स्थान होता है। शब्द भाषा की स्वतंत्र और अर्थवान इकाई है। शब्द और अर्थ में नित्य संबंध माना जाता है। वास्तव में शब्द सार्थक होते हैं और भाषा-विशेष के वर्णों के विशिष्ट क्रम से बनते हैं। वे वस्तु, विचार या भाव को अभिव्यक्त करते हैं।

किसी भी भाषा में प्रयुक्त शब्दों के समूह को उस भाषा का शब्द भंडार कहते हैं। भाषा का शब्द-भंडार कितना ही बड़ा क्यों न हो फिर भी वह निरन्तर परिवर्तित और विकसित होता रहता है। पुराने शब्द अप्रचलित हो जाते हैं और नए शब्द आ जाते हैं। इसी तरह शब्दों के पुराने अर्थ भी बदल जाते हैं और नए अर्थ देने लगते हैं।

शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर किया जाता है।

1. स्रोत या इतिहास के आधार पर
2. रचना के आधार पर
3. प्रयोग के आधार पर
4. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर
5. अर्थ के आधार पर

स्रोत या इतिहास के आधार पर

किसी भी जीवित भाषा में विभिन्न समकालीन भाषाओं के अनेक शब्द समाहित हो जाते हैं। यह उस भाषा की जीवंतता और विकास का प्रमाण है। हिंदी भी निरंतर अनेक भाषा स्रोतों से प्रभावित होकर अपने शब्द भंडार की वृद्धि करती रही है। सुविधा की दृष्टि से हिंदी के शब्दों को उनके स्रोत के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जाता है।

- (क) तत्सम
- (ख) तद्भव
- (ग) देशज
- (घ) आगत (विदेशी)
- (ङ) संकर

(क) **तत्सम शब्द** - तत्सम (तत् + सम) शब्द का अर्थ है 'उसके समान'। यहाँ 'उस' से तात्पर्य है संस्कृत के समान। हिंदी के बहुत सारे शब्द संस्कृत से उसी रूप में ग्रहण कर लिए गए हैं जिस रूप में उनका उपयोग संस्कृत में होता है। इसीलिए उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं; जैसे - भूमि, पुष्प, विद्वान, पृथ्वी, अहंकार, ममता, सुंदर, साहस, शनैः शनैः, रवि, स्वप्न।

(ख) **तद्भव शब्द** - तद्भव का अर्थ है उससे उत्पन्न। संस्कृत के वे शब्द जो पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिंदी से विकसित होते हुए हिंदी में अपने परिवर्तित रूप में प्रचलित हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं: जैसे - सप्त > सात, कर्म > काम, वर्ष > बरस, मातृ > माता, दुग्ध > दूध, कुम्भकार > कुम्हार, क्षीर > खीर, पत्र > पत्ता, मयूर > मोर।

नीचे तत्सम शब्दों से विकसित तद्भव शब्दों की एक छोटी सूची दी जा रही है-

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अंगुष्ठ	अँगूठा	आम्र	आम
अक्षि	आँख	आशिष	आसीस
अग्नि	आग	इक्षु	ईख
अमूल्य	अमोल	उपरि	ऊपर
अर्ध	आधा	उलूक	उल्लू
ओष्ठ	ओठ	ग्राम	गाँव
कर्ण	कान	चंद्र	चाँद
काष्ठ	काठ	जिह्वा	जीभ
कुपुत्र	कपूत	दंत	दाँत
कुष्ठ	कोढ़	सत्य	सच
कोकिल	कोयल	स्तंभ	खंभा
क्षार	खार	स्वर्ण	सोना
क्षण	छिन	हस्त	हाथ

(ग) **देशज शब्द** - जिन शब्दों के स्रोत अज्ञात हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं। देशज शब्दों का मूल सामान्यतः जन-भाषाओं में होता है: जैसे-पगड़ी, लोटा, ठेठ, झोला, खाट, झाड़ू, झंझट, थप्पड़, ठोकर, भोंपू, अटकल, भोंदू।

(घ) **आगत (विदेशी) शब्द** - 'आगत' शब्द का अर्थ है- आया हुआ। आगत शब्द वे शब्द हैं जो दूसरी भाषाओं से आए हैं और आज हिंदी के अपने बन गए हैं। हिंदी में अरबी, फ़ारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के कई शब्द समा गए हैं। उदाहरण के लिए-

अरबी - अखबार, अदालत, अल्लाह, आईना, इंतजार, इंसाफ़, इम्तहान, इस्तीफ़ा, औरत, क़फ़न, कब्र, कसम, कसाई, कानून, किताब, कुर्सी, खत, गदर, गबन, गुनाह, जनाज़ा, जुलूस

जलापा, जुर्माना, तरीका, ताकत, तूफान, दलील, दवा, दौलत, निकाह, फ़कीर, फ़सल, मज़हब, मरीज़ मस्जिद, मुकदमा, मुहावरा, यतीम, रईस, रिश्त, वकील, शतरंज, शैतान, सलाह, हवा, हिरासत, हुक्म।

फ़ारसी - आदमी, आमदनी, आसमान, कमरा, कारीगर, कारोबार, खुशामद, गुब्बारा, गुलाब, चिराग, चिलम, जंजीर, ज़मीन, ज़हर, जानवर, तराजू, दरवाज़ा, दिमाग, दूरबीन, नमक, परदा, पोदीना, प्याज़ फ़रियाद, फ़ौज फ़ौलाद, बदमाश बालूशाही, बीमा, बेईमान, मज़दूर, मसाला, मेज़, मेहमान, रसीद, शादी, शायरी, सब्जी, सरकार, सुरमा।

तुर्की - उर्दू, कुरता, कुली, कैंची, चाकू, तोप, बंदूक, बारूद, बेगम, सौगात।

अंग्रेज़ी - अपील, इंजन, एकड़, कंपनी, कमीशन, कार, कॉलेज, कालोनी, कूपन, कोट, क्रिकेट, क्लब, गाउन, गैस, ग्राम, चाकलेट, चेक, जाकेट, जेल, टाई, टायर, डायरी, डिग्री, डेरी, नर्स, निब, पंप, पाइप, पाउडर, फ्लैट, पुलिस, प्लेटफार्म, फुटबाल, फ़ोटो, फॉक, बजट, बुशर्ट, बूट, बैंक, बोगी, मेजर, मोटर, लॉटरी, सूटकेस, स्कूटर, स्टील, स्टेशन, हीटर।

पुर्तगाली - आया, आलपिन, इस्पात, गमला, चाबी, तौलिया, नीलाम, पादरी, फीता, बालटी, मिस्तरी, संतरा, साबुन।

भाषाओं से - मिग, रूबल, स्पुतनिक (रूसी), काजू, कारतूस, अंग्रेज़ (फ्रांसीसी), चीनी, चाय (चीनी), रिक्शा (जापानी) तुरूप (डच), खोपरा (मलय)।

(ड) संकर शब्द - दो भिन्न स्रोतों से आए शब्दों के मेल से बने नए शब्दों को संकर शब्द कहते हैं, हिंदी में ऐसे अनेक शब्द हैं जो हिंदी-अरबी, हिंदी-फारसी आदि के शब्दों या शब्दांशों के मेल से बने हैं: जैसे-

रेलगाड़ी	-	रेल (अंग्रेज़ी)	+	गाड़ी (हिंदी)
पानदान	-	पान (हिंदी)	+	दान (फ़ारसी)
छायादार	-	छाया (संस्कृत)	+	दार (फ़ारसी)
सीलबंद	-	सील (अंग्रेज़ी)	+	बंद (फ़ारसी)

रचना के आधार पर

रचना के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं-

1. मूल शब्द: 2. व्युत्पन्न शब्द

1. मूल शब्द - वे शब्द जो किसी दूसरे शब्द या शब्दांश के योग से न बने हों और अपने में पूर्ण हों, उन्हें मूल शब्द कहते हैं: जैसे- सेना, फूल, कुत्ता, कुरसी। इन्हें रूढ़ शब्द भी कहते हैं। इनके सार्थक खंड नहीं हो सकते।

2. व्युत्पन्न शब्द - दो शब्दों या शब्दांशों के योग से बने हुए शब्दों को व्युत्पन्न शब्द कहते हैं। व्युत्पन्न शब्द दो प्रकार के हैं-

(क) यौगिक (ख) योगरूढ़

(क) यौगिक शब्द - दो शब्दों या शब्दांशों के योग से बने शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं: जैसे-

शब्द + शब्द = सेना + पति (सेनापति)

शब्दांश + शब्द = अनु + शासन (अनुशासन)

शब्द + शब्दांश = चतुर + आई (चतुराई)

(ख) योगरूढ़ - जो यौगिक शब्द एक ही अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं: जैसे- चारपाई अर्थात् जिसके चार पाए हैं। यहाँ चारपाई का अर्थ है- खाट (जिस पर सोया जाता है) न कि गाय अथवा कुर्सी। अन्य शब्द हैं- जलज, लंबोदर, पीतांबर आदि (रचना के आधार पर निर्मित शब्दों के संबंध में आगे विस्तार से बताया गया है।)

प्रयोग के आधार पर

प्रयोग की दृष्टि से शब्दों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है-

1. सामान्य शब्द

2. पारिभाषिक या तकनीकी शब्द

1. सामान्य शब्द - सामान्य शब्दावली में वे शब्द आते हैं जिनका संबंध आम जन-जीवन के साथ होता है। इन शब्दों का प्रयोग भाषा-समुदाय के सदस्य अपने दैनिक व्यवहार में करते हैं: जैसे-हाथ, पैर, सुबह, शाम, घर, बाज़ार, दाल, भात।

2. पारिभाषिक शब्द - ऐसे शब्द जो ज्ञान-विज्ञान या विभिन्न व्यवसाय क्षेत्रों में विशिष्ट अर्थों में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं। उन्हें तकनीकी शब्द भी कहते हैं: जैसे-संज्ञा, सर्वनाम आदि व्याकरण से संबंधित पारिभाषिक शब्द हैं तथा परावर्तन, घर्षण, घनत्व आदि भौतिक-विज्ञान के। कुछ पारिभाषिक शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है-

विज्ञान (Science)

अनुक्रिया (response)

उत्पाद (Product)

आनुवंशिक (genetic)

कोशिका (Cell)

आवृत्ति (frequency)

जड़त्व (inertia)

जीवमंडल (biosphere)

प्राणि-विज्ञान (zoology)

जीवविज्ञान (biology)

प्रेरण (induction)

तंत्रिका (nerve)

ध्वनिविज्ञान (acoustics)

नाभिक (nucleus)

निःश्वसन (expiration)

नौसंचालन (navigation)

परिस्थितिविज्ञान (ecology)

प्रकाशिकी (optics)

प्रचालन (operation)

प्रजनन (breeding)

प्रतिजैविक (antibiotic)

प्रतिध्वनि (echo)

ब्रह्मांड विज्ञान (cosmology)

भूविज्ञान (geology)

भौतिकी (physics)

यांत्रिकी (mechanics)

रसायन (Chemistry)

वनस्पति विज्ञान (botany)

विकिरण (radiation)

विषम जातिय (heterogeneous)

संश्लेषण (synthesis)

सजातिय (homogeneous)

सूक्ष्मतरंग (microwave)

मानविकी और वाणिज्य (Humanities and Commerce)

अंकित मूल्य (face value)

अंतर्मुखी (introvert)

अतिक्रमण (encroachment)

अर्थशास्त्र (economics)

अधिकार-पत्र (charter)

अधिनायक (charter)

अपमिश्रण (adulteration)

अभिकरण (agency)

अभिवृत्ति (attitude)

आप्तवचन आप्तपुरुष (authority)

इतिहास (history)

उपसाधन (accessary)

कुंठा (frustration)

कूटनीति (diplomacy)

कूटसंकेत (code)

गृहविज्ञान (home science)

नौकरशाही (bureaucracy)

न्यायाधिकर्ता (attorney)

पूंजी (capital)

पंचनिर्णय (arbitration)

परिवेश (environment)

परिसंपत्ति (asset)

परेषण (consignment)

पुस्तकालय विज्ञान (library science)

प्रतिमान (criterion)

बहिर्मुखी (extrovert)

बीजक (invoice)

भाषाविज्ञान (linguistics)

भूगोल (geography)

मनोविज्ञान (psychology)

मूल्यहास (depreciation)

राजनीतिशास्त्र (political science)

तर्कशास्त्र (logic)
 तालाबंदी (lockout)
 तुष्टीकरण (appeasement)
 दर्शन (philosophy)
 ध्रुवण (polarization)
 निपटान (disposal)
 निरंकुश (autocratic)
 निर्वाचन क्षेत्र (constituency)
 निष्क्रिय लेखा (dead account)
 समाजशास्त्र (sociology)
 समालोचना (criticism)
 सीमाशुल्क (Custom duty)

ललित कला (fine arts)
 वाणिज्य (commerce)
 वार्षिक विवरणी (annual return)
 विषय-क्षेत्र (scope)
 संकल्पना (communication)
 संचार (estate duty)
 संपदा शुल्क (estate duty)
 संवेदनशील (sensitive)
 संस्कृति (culture)
 सौंदर्य शास्त्र (aesthetics)
 स्वेच्छाचारी (autocratic)
 हुंडी (bill of exchange)

प्रशासन (Administration)

अधीक्षक (Superintendent)
 अभिरक्षा (custody)
 उपक्रम (undertaking)
 एकक (unit)
 एकमुश्त राशि (lumpsum)
 एकाधिकार (monopoly)
 कनिष्ठ (junior)
 कार्यकारी (acting)
 कार्यवृत्त (minutes)
 कार्रवाई (action)
 दंड न्यायालय (criminal court)
 दावेदार (claimant)
 निदेशालय (directoriate)
 पदावनति (demotion)
 पात्रता (eligibility)

प्रतिहस्ताक्षर (counter Signature)
 प्रदाय (supply)
 प्रभाग (division)
 प्राधिकार/प्राधिकारी/प्राधिकारण (authority)
 बंध-पत्र (bond)
 मिसिल (file)
 मुआवजा, प्रतिपूर्ति (compensation)
 रिक्ति (vacancy)
 लेखा परीक्षा (audit)
 वरिष्ठ (senior)
 संस्तुति, सिफारिश (recommendation)
 सचिव (secretary)
 स्मरणपत्र (reminder)
 स्थानांतरण, हस्तांतरण (transfer)

व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर

व्याकरणिक दृष्टि से शब्दों को उनके प्रकार्य के आधार पर दो वर्गों में बाँटा जाता है-

1. विकारी 2. अविकारी

1. **विकारी** - विकारी शब्द वे होते हैं जिनमें लिंग, वचन, कारक, काल, पक्ष के कारण परिवर्तन होता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विकारी शब्द हैं: जैसे- लड़का-लड़के, मैं-मेरा, अच्छा-अच्छी, जाना-गया।
2. **अविकारी** - ऐसे शब्द जिनके मूलरूप में परिवर्तन या विकार नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द (अव्यय) कहते हैं। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक और निपात अविकारी शब्दों की श्रेणी में आते हैं: जैसे- आज, यहाँ, और, अथवा, अरे, ही, तक। व्याकरणिक प्रकार्य की दृष्टि से शब्दों का विवेचन अगले अध्याय 'पद व्यवस्था' में किया गया है।

अर्थ के आधार पर

शब्द भाषा की लघुतम इकाई है। प्रत्येक शब्द का अपना एक अर्थ होता है, जिसे मुख्यार्थ कहते हैं। अर्थ के आधार पर शब्द के चार भेद किए जाते हैं-

- | | |
|--------------------|--------------------|
| 1. पर्यायवाची शब्द | 2. विलोमार्थी शब्द |
| 3. एकार्थी शब्द | 4. अनेकार्थी शब्द |

1. **पर्यायवाची शब्द** - जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। किंतु अर्थ में समानता होते हुए भी पर्यायवाची शब्द प्रयोग में सर्वथा एक-दूसरे का स्थान नहीं ले सकते, कहीं एक शब्द उपयुक्त होता है तो कहीं अन्य। प्रत्येक शब्द का प्रयोग विषय और संदर्भ के अनुसार ही करना उचित होता है। उदाहरण के लिए, पितरों का तर्पण, 'जल' से किया जाना उचित है, 'पानी' से नहीं। भाव यह है कि शब्द कहीं पूर्ण पर्यायवाची होते हैं, कहीं आंशिक।

पर्यायवाची शब्द

- | | |
|-------|--|
| अग्नि | - आग, पावक, हुताशन, दहन, अनल। |
| अमृत | - पीयूष, सुधा, अमिय। |
| अश्व | - घोड़ा, वाजि, हय, सैंधव, तुरग, तुरंगम। |
| असुर | - दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर। |

- आँख - चक्षु, नेत्र, लोचन, नयन, दृग।
- आकाश - गगन, व्योम, अंबर, नभ, शून्य, आसमान।
- इंद्र - सुरपति, देवराज, सुरेंद्र, शचीपति, पुरंदर।
- ईश्वर - परमात्मा, भगवान, परमेश्वर, ईश, त्रिलोकनाथ, जगन्नाथ, जगदीश, प्रभु।
- कपड़ा - वस्त्र, पट, वसन, अंबर, चीर।
- कमल - अरविंद, उत्पल, पद्म, कंज, राजीव, इंदीवर, पुंडरीक, सरसीरुह, वारिज, सरसिज, तामरस, नलिन, पंकज।
- कामदेव - अनंग, मनोभव, मनसिज, मदन, पंचशर, पुष्पधन्वा, मन्मथ, मार, मनोज, रतिपति, मीनकेतु।
- कृष्ण - श्याम, घनश्याम, मोहन, केशव, माधव, वासुदेव, गिरधर, गोपाल, मोहन, राधावल्लभ, वंशीधर।
- गणेश - गजवदन, लंबोदर, गजानन, विनायक, गणपति, गौरीसुत, मूषकवाहन, एकदंत, विध्वेश।
- गंगा - भागीरथी, मंदाकिनी, त्रिपथगा, देवनदी, जाह्नवी, सुरसरिता।
- घर - गृह, आलय, सदन, निकेत, आगार, धाम, मंदिर, निवास।
- चंद्र - शशि, सुधांशु, राकेश, निशाकर, मयंक, सोम, मृगांक, कलानिधि, हिमांशु, सुधाकर, विधु, निशापति, शशांक।
- जल - पानी, अंबु, सलिल, उदक, नीर, वारि, पय, तोय।
- तलवार - खड्ग, कृपाण, असि, करवाल, शमशीर।
- तालाब - सर, सरोवर, तड़ाग, जलाशय, ताल, पोखर।
- देवता - सुर, अमर, देव, निर्जर, अजर।
- नदी - तरंगिणी, सरिता, तटिनी, निर्झरिणी।
- पक्षी - चिड़ियां, पतंग, द्विज, अंडज, विहग, विहंगम, खग, पखेरू, नभचर।
- पति - भार्या, दारा, वामांगी, सहधर्मिणी, गृहिणी, अर्धांगिनी।
- पर्वत - पहाड़, भूधर, महीधर, नग, शैल, गिरि, भूमिधर।
- पवन - समीर, बयार, अनिल, पवमान, प्रभंजन, वायु, मारुत, हवा।
- पुत्र - सुत, तनय, बेटा, लड़का, तनुज, आत्मज।
- पृथ्वी - भू, धरा, उर्वी, धरती, वसुधा, अवनि, वसुंधरा, धरित्री, मेदिनी, वसुमती, धरणी।
- भौंरा - भ्रमर, भृंग, मधुप, अलि, मधुकर, पटपद।
- महादेव - शिव, शंभु, शंकर, सतीश, महेश, त्रिलोचन, चंद्रशेखर, पशुपति, गौरीपति, कैलाशनाथ, त्रिपुरारि।

- मेघ - बादल, वारिद, घन, जलधर, नीरद, पयोधर।
 रात - रात्रि, रैन, रजनी, यामिनी, विभावरी।
 सागर - समुद्र, जलधि, जलनिधि, सिंधु, नदीश, पयोधि, वारीश, रत्नाकर, पयोनिधि।
 सूर्य - दिनकर, रवि, मार्तंड, भास्कर, प्रभाकर, सविता, पतंग, हंस, अर्क, आदियु, भानु, तरणि, अंशमाली।
 सेना - कटक, दल, वाहिनी, फ़ौज।
 सोना - स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हेम, हाटक, कंचन।
 सिंह - व्याघ्र, मृगराज, वनराज, केसरी, पंचानन।
 स्त्री - रानी, ललना, कांता, अंगना, कामिनी, सुंदरी, वनिता, रमणी।

नीचे कुछ ऐसे शब्दों की सूची दी जा रही है जो प्रत्यक्षतः पर्यायवाची प्रतीत होते हैं, पर जिनके प्रयोग में सूक्ष्म अंतर का ध्यान रखना आवश्यक है-

अनुभव - अनुभूति, अनुरूप-अनुकूल, अपराध-पाप, विशेषज्ञ-दक्ष-पारंगत, अवनति-पतन, अवस्था-आयु-वय, अस्त्र-शस्त्र, आयुध, आचार-व्यवहार, आदेश-आज्ञा-अनुज्ञा, आनंद-सुख, ओषधि-औषध, इच्छा-कामना, लालसा-अभिलाषा, ईर्ष्या-द्वेष-स्पर्धा, कपड़ा-वस्त्र, दया-कृपा, करुणा-सहानुभूति, कष्ट-यंत्रणा-यातना, शोक-विषाद-व्यथा, घमंड-अभिमान-दर्प-गर्व-मद, नारी-स्त्री-महिला, निंदा-अपवाद, कलंक-अपयश, पत्ता-किसलय-पल्लव, प्रमाद-भ्रम, प्रयोग-उपयोग, प्रार्थना-विनती-विनय-अनुरोध, प्रेम-प्रणय-स्नेह-वात्सल्य, शंका-आशंका-संदेह-संशय इत्यादि।

उपर्युक्त में से कुछ के अर्थ-भेद नीचे स्पष्ट किए जा रहे हैं-

अनुभव-अनुभूति - व्यवहार या अभ्यास से प्राप्त ज्ञान को अनुभव कहते हैं। अनुभूति आंतरिक ज्ञान है जो चिंतन या मनन से प्राप्त होता है: जैसे मोहन को इस कार्य का बहुत अनुभव है।

अनुभूति के बिना कविता नहीं लिखी जा सकती।

अनुरूप-अनुकूल - अनुरूप से समानता या उपयुक्तता का बोध होता है। अनुकूल से पक्ष में या अनुसार का भाव प्रकट होता है: जैसे-

अमित को उसकी योग्यता के अनुरूप पद नहीं मिला।

अनुकूल वायु पाकर नौका चल पड़ी।

अस्त्र-शस्त्र - फेंक कर चलाए जाने वाले हथियार को अस्त्र और हाथ में पकड़ कर चलाए जाने वाले हथियार को शस्त्र कहते हैं: जैसे- आधुनिक युग में दूर-लक्ष्य वेधी अस्त्रों का प्रयोग अधिकता से होने लगा है।

तलवार जैसे शस्त्रों का प्रयोग आधुनिक युद्धों में बंद-सा हो गया है। धनुष-बाण अस्त्र-शस्त्र दोनों हैं।

अवस्था-आयु-वय - आयु समस्त जीवन काल को कहते हैं। वय से उम्र का बोध होता है। अवस्था के अर्थ में भी वय का प्रयोग होता है: जैसे-स्वामी शंकराचार्य ने छोटी अवस्था में ही अद्भुत विद्वत्ता का परिचय दिया था।

नियम-संयम से रहने वाले लंबी आयु पाते हैं।

अपराध-पाप - अपराध एक असामाजिक कृत्य है और उसके लिए दंड की व्यवस्था है। पाप धर्म और समाज की दृष्टि से निकृष्ट और अशुभ कार्य हैं: जैसे-

मोहन ने रमेश के घर में चोरी करने का अपराध किया है।

पशु-पक्षियों को सताना पाप है।

विलोमार्थक शब्द

किसी शब्द से विपरीत अर्थ देने वाला शब्द उसका विलोम या विपरीतार्थी कहा जाता है: जैसे-मान का विलोमार्थी शब्द अपमान है।

नीचे कुछ शब्द और उनके विलोमार्थी शब्दों की सूची दी जा रही है।

शब्द	विलोमार्थी शब्द	शब्द	विलोमार्थी शब्द
अथ	इति	कुटिल	सरल
अवनति	उन्नति	कृत्रिम	अकृत्रिम, नैसर्गिक, स्वाभाविक, प्रकृत
अंतरंग	बहिरंग	ग्राह्य	त्याज्य, अग्राह्य
अल्पज्ञ	बहुज्ञ	ज्योति	तम
अल्पायु	दीर्घायु	जीवित	मृत
अक्षम	सक्षम	जटिल	सरल
अनुराग	विराग	ताप	शीत
अनुकूल	प्रतिकूल	तामसिक	सात्विक
अधुनातन	पुरातन	तीव्र	मंद
अस्त	उदय	दुर्जन	सज्जन
अमर	मर्त्य	देय	अदेय
अमृत	विष	निर्बल	सबल
अलभ्य/दुर्लभ	सुलभ	ध्वंस	निर्माण
अंधकार	प्रकाश	धृष्ट	विनीत

आयात	निर्यात	निंदा	स्तुति
आविर्भाव	तिरोभाव	परतंत्र	स्वतंत्र
आगत	विगत, निर्गत	पाप	पुण्य
आरोह	अवरोह	यथार्थ	कल्पित
आदान	प्रदान	रिक्त	पूर्ण
आर्द्र	शुष्क	लौकिक	अलौकिक
आदि	अंत	लुप्त	प्रकट
आस्तिक	नास्तिक	विजय	पराजय
आलोक	अंधकार	व्यष्टि	समष्टि
आभ्यंतर	बाह्य	सामिष	निरामिष
उदयाचल	अस्ताचल	सुकर	दुष्कर
ऐहिक	पारलौकिक	सुलभ	दुर्लभ
ऋज	वक्र	सम्मान	अपमान
उपकार	अपकार	हास	वृद्धि
उत्थान	पतन	हर्ष	विषाद
कनिष्ठ	ज्येष्ठ	हार	जीत

एकार्था शब्द

जिन शब्दों का अर्थ सभी परिस्थितियों में एक-सा रहता है, उन्हें एकार्थी या एकार्थक शब्द कहते हैं: जैसे-

अहंकार, उत्तम, शस्त्र, अपराध, पाप, निंदा, अपयश, कलंक, अनुराग, आसक्ति, अर्चन, स्वागत, आराधना, ऋषि, तंद्रा, सुषुप्ति, निपुण, अभिनेत्री, निधन, प्रणय, मापदंड, पत्नी, पुष्प, भ्रांति, मित्र, यातना, श्रद्धा, सम्राट।

अनेकार्थक शब्द

प्रयोग के अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न अर्थ देने वाले शब्द अनेकार्थी कहलाते हैं: जैसे

- अंबर - वस्त्र, आकाश, कपास।
- अनंत - असीम, आकाश, अविनाशी, विष्णु, शेषनाग।
- अपेक्षा - आवश्यकता, तुलना में।
- अभिजात - कुलीन, पूज्य, मनोहर।

अरुण	-	लाल, प्रातःकालीन सूर्य, सूर्य का सारथी।
अलि	-	भौरा, कोयल, सखी।
अवकाश	-	बीच का समय, अवसर, छुट्टी।
अवधि	-	सीमा, निर्धारित समय।
आम	-	एक फल, सामान्य।
आराम	-	बगीचा, सुख-चैन।
उत्सर्ग	-	त्याग, दान, समाप्ति।
कनक	-	सोना, धतूरा।
कर	-	हाथ, किरण, हाथी की सूँड, टैक्स।
कल	-	आगमी या बीता हुआ दिन, मशीन, आराम।
कुंडली	-	साँप की गेंडुरी, जन्मकुंडली।
कुल	-	वंश, सब।
गति	-	चाल, दशा, मोक्ष।
गुरु	-	शिक्षक, बड़ा, भारी, मुश्किल से पचने वाला।
घन	-	बादल, घटा, अधिक बड़ा हथौड़ा।
तार	-	तारघर का तार, लोहे आदि का तार, चासनी का तार, उद्धार।
तीर	-	तट, बाण।
दंड	-	डंडा, सज़ा, एक व्यायाम, डंठल।
दक्षिण	-	दाहिना, अनुकूल, दक्षिण दिशा।
निशान	-	चिह्न, ध्वजा, डंका।
पत्र	-	चिट्ठी, पत्ता, समाचारपत्र, पन्ना।
पद	-	चरण, कविता की पंक्ति, दर्जा, शब्द।
पृष्ठ	-	पीठ, पन्ना, पीछे का भाग, सतह।
भूत	-	प्रेत, प्राणी, बीता हुआ।
मत	-	राय, संप्रदाय, निषेध।
मुद्रा	-	मोहर, छाया, सिक्का, मुख का भाव।
विजया	-	दुर्गा, भाँग।
विधि	-	कानून, ब्रह्मा, रीति।
व्याज	-	छल, बहाना, सूद।
श्रुति	-	वेद, कान।

शब्द - निर्माण

हम जान चुके हैं कि मूल शब्दों से कुछ शब्दांशों या शब्दों को जोड़कर नए शब्दों का निर्माण किया जाता है। यह शब्द-निर्माण तीन प्रकार से होता है-

1. उपसर्ग द्वारा
2. प्रत्यय द्वारा
3. समास द्वारा

उपसर्ग

वे लघुतम शब्दांश हैं जो शब्द के प्रारंभ में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं: जैसे-
अ + धर्म = अधर्म, बे + ईमान = बेईमान, क + पूत = कपूत, सु + पुत्र = सुपुत्र।
हिंदी में तीन प्रकार के उपसर्ग हैं-

1. तत्सम उपसर्ग
 2. तद्भव उपसर्ग
 3. आगत उपसर्ग
1. **तत्सम उपसर्ग** - ये उपसर्ग संस्कृत से आए हैं और तत्सम शब्दों में ही लगते हैं। नीचे कुछ प्रचलित तत्सम उपसर्ग उदाहरण सहित दिए जा रहे हैं-

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिनायक, अधिवक्ता, अधिपति।
अनु	पीछे, समान	अनुचर, अनुभव, अनुरूप, अनुकरण, अनुवाद, अनुमान।
अप	बुरा, हीन	अपयश, अपमान, अपशब्द।
आ	तक, पर्यंत	आजीवन, आमरण, आदान।
उत्	श्रेष्ठ, ऊपर	उत्थान, उद्गम, उद्योग, उत्कर्ष।
दुः, दुस्	बुरा, कठिन	दुस्साहस, दुर्भाग्य, दुर्गुण, दुस्साध्य, दुष्कर।
निर्, निस्	नहीं, रहित	निष्कान, निस्संदेह, निर्दोष, निर्जीव, निर्विकार, नीरोग, नीरव।
प्र	अधिक, आगे	प्रसिद्ध, प्राचार्य, प्रचार, प्रबंध, प्रस्थान।
वि	विशेष, अलगाव	विशिष्ट, विदेश, विज्ञान, विक्रय, वियोग।
सम्	समान, संयोग	सम्मान, संभव, सम्मेलन, संयम।
अ/अन्	अभाव	अभाव, अज्ञान, अधर्म, अनादि, अनुचित, अनधिकार।
सु	अच्छा, श्रेष्ठ	सुबोध, सुगम, सुपुत्र, स्वागत।
कु	बुरा	कुपुत्र, कुकर्म, कुरूप, कुयोग, कुमति।

2. **तद्भव उपसर्ग** - हिंदी के अपने कुछ उपसर्ग विकसित हुए हैं। हिंदी के अधिकांश तद्भव उपसर्ग संस्कृत के तत्सम उपसर्गों से ही विकसित हुए हैं।

अपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ/अन	निषेध, नहीं	अछूत, अनपढ़, अनहोनी।
नि	बुरा, कम	निडर, निहत्था।
दु	बुरा, कम	दुबला, दुसाध्य।

3. **आगत उपसर्ग**- विदेशी भाषाओं के शब्दों के आने के साथ-साथ विदेशी भाषाओं के कुछ उपसर्ग भी हिंदी में आ गए हैं। हिंदी में आगत उपसर्ग मुख्यतः अरबी-फ़ारसी के हैं।

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
ब	से, के साथ	बखूबी, बदौलत, बनाम
बा	के साथ	बाअदब, बाकायदा।
बे	बिना	बेअदब, बेवफ़ा।
बद	बुरा	बदसूरत, बदतमीज़।
ला	नहीं, अभाव	लापता, लाजवाब, लापरवाही।
हम	साथ-साथ	हमसफ़र, हमजोली, हमराह, हमदम।
सर	मुख्य	सरपंच, सरहद।

प्रत्यय

प्रत्यय भाषा के वे लघुतम सार्थक खंड हैं जो शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं।

1. **कृत् प्रत्यय** - क्रिया के मूल रूप (धातु) से जुड़कर संज्ञा अथवा विशेषण बनाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्दों को कृदंत कहते हैं। उदाहरण-

प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय	शब्द
हार	खेलनहार, होनहार	आलू	झगड़ालू
ऐया	गवैया, खिवैया, पढ़ैया	इयल	सड़ियल, अड़ियल
अक्कड़	भुलक्कड़, पियक्कड़ घुमक्कड़।	नी	चटनी, सूँघनी ओढ़नी
ऊ	खारू, उड़ाऊ, रट्टू	ई	हँसी, बोली
दार	देनदार, लेनदार	आई	पढ़ाई, भलाई

2. **तद्धित प्रत्यय** - जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम और अव्यय के बाद लगते हैं और संज्ञा तथा विशेषण शब्द बनाते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

आर	सोना-सुनार, लोहा-लुहार।
इया	डिब्बा-डिबिया, खाट-खटिया, लठ-लठिया।
ई	पहाड़-पहाड़ी, रस्सा-रस्सी, खेत-खेती।
कार	कला-कलाकार, पत्र-पत्रकार, चित्र-चित्रकार, साहित्य-साहित्यकार।
गर	जादू-जादूगर, बाजी-बाजीगर।
दार	किराया-किराएदार, दुकान-दुकानदार।
पन	बच्चा-बचपन, लड़का-लड़कपन।

विशेषण से संज्ञा

आस	मीठा-मिठास, खट्टा-खटास।
आई	अच्छा-अच्छाई, बुरा-बुराई, भला-भलाई।
आहट	कड़वा-कड़वाहट, गरम-गरमाहट।
ई	अमीर-अमीरी, गरीब-गरीबी।
ता/त्व	लघु-लघुता, लघुत्व, प्रभु-प्रभुता, प्रभुत्व।
पन	काला-कालापन, बड़ा-बड़प्पन।
पा	मोटा-मोटापा, बूढ़ा-बुढ़ापा।

संज्ञा से विशेषण

ई	गुलाब-गुलाबी, पंजाब-पंजाबी।
ईला	रस-रसीला, चमक-चमकीला।
ऊ	बाज़ार-बाज़ारू, पेट-पेटू, ढाल-ढालू।
इक	धर्म-धार्मिक, समाज-सामाजिक, नीति-नैतिक।

समास

जिस प्रकार किसी शब्द में प्रत्यय 'और / अथवा' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनते हैं, उसी प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से भी नए शब्द बनते हैं। शब्द-निर्माण की इस विधि को समास कहते हैं: जैसे।

माता	+	पिता	=	माता-पिता	-	माता और पिता।
विश्राम	+	गृह	=	विश्रामगृह	-	विश्राम के लिए गृह
घोड़ा	+	सवार	=	घुड़सवार	-	घोड़े पर सवार।

सामासिक शब्द में प्रायः दो पद होते हैं। पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं और समास प्रक्रिया से बने पद को समस्त पद कहते हैं। समस्त पद के दोनों पदों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं: जैसे- गंगाजल समस्त पद में दो पद हैं। 'गंगा' और 'जल'। इसका विग्रह होगा 'गंगा का जल'।

समास के भेद - समास के छः भेद होते हैं-

- | | |
|------------------|-------------------|
| 1. तत्पुरुष समास | 2. कर्मधारय समास |
| 3. द्विगु समास | 4. बहुव्रीहि समास |
| 5. द्वंद्व समास | 6. अव्ययीभाव समास |

1. **तत्पुरुष समास** - इस समासमें उत्तरपद प्रधान होता है और पूर्वपद गौण होता है। तत्पुरुष समास की रचना में समस्त पदों के बीच में आने वाले परसर्गों; जैसे- का, से, पर आदि का लोप हो जाता है-

युद्ध क्षेत्र	-	युद्ध	+	क्षेत्र	=	युद्ध का क्षेत्र
राजकुमार	-	राज	+	कुमार	=	राजा का कुमार
रसोईघर	-	रसोई	+	घर	=	रसोई के लिए घर
हस्तलिखित	-	हस्त	+	लिखित	=	हस्त (हाथ) से लिखित
पुस्तकालय	-	पुस्तक	+	आलय	=	पुस्तक का आलय
ध्यानमग्न	-	ध्यान	+	मग्न	=	ध्यान में मग्न

2. **कर्मधारय समास** - कर्मधारय समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य होता है अथवा पूर्वपद और उत्तरपद में उपमेय-उपमान का संबंध होता है: जैसे-

(i) समस्तपद	विशेषण	+	विशेष्य	विग्रह
नीलकमल	नील	+	कमल	नीले रंग का कमल
कालीमिर्च	काली	+	मिर्च	काले रंग की मिर्च
पनचक्की	पानी	+	चक्की	पानी से चलने वाली चक्की
नीलगगन	नील	+	गगन	नीले रंग का गगन
महाराजा	महान	+	राजा	महान राजा
महात्मा	महान	+	आत्मा	महान आत्मा
(ii) समस्तपद	उपमेय	+	उपमान	विग्रह
कमलनयन	नयन	+	कमल	कमल के समान नयन
मुखचंद्र	मुख	+	चंद्र	चंद्र के समान मुख

3. **द्विगु समास** - जिन समासों का पूर्वपद संख्यावाची शब्द हो, वहाँ द्विगु समास होता है। अर्थ की दृष्टि से यह समास प्रायः समूहवाची होता है: जैसे-

तिरंगा - तीन रंगों का समाहार

चौमासा - चौ (चार) मासों का समाहार

चौराहा - चार राहों का समाहार

4. **बहुव्रीहि समास** - बहुव्रीहि समास में दोनों पद गौण होते हैं तथा ये दोनों मिलकर किसी अन्य पद के विषय में कुछ संकेत करते हैं। अन्य पद ही 'प्रधान' होता है: जैसे-

समस्त पद	गौण पद + गौण पद	विग्रह	अन्य पद
पीतांबर	पीत + अंबर	पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका	कृष्ण, विष्णु
दशानन	दश + आनन	दश हैं आनन जिसके	रावण
नीलकंठ	नील + कंठ	नीला है कंठ जिसका	शिव
गजानन	गज + आनन	गज के समान है आनन जिसका	गणेश
गिरिधर	गिरि + धर	गिरि को धारण करने वाला	कृष्ण

5. **द्वंद्व समास** - इस समास में दोनों ही पद प्रधान होते हैं तथा दोनों पदों को जोड़ने वाले समुच्चयबोधक अव्यय का लोप हो जाता है: जैसे-

समस्त पद	विग्रह
भाई-बहन	भाई और बहन
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
सुख-दुःख	सुख और दुःख
भला-बुरा	भला या बुरा
रात-दिन	रात और दिन
दो-चार	दो या चार

6. **अव्ययीभाव समास** - इस समास में पूर्वपद अव्यय होता है और समस्त पद भी अव्यय (क्रिया विशेषण) का काम करता है: जैसे-प्रतिदिन, यथाशक्ति। पुनरुक्त शब्दों में समास होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है: जैसे- साफ़-साफ़, जल्दी-जल्दी, दिनोंदिन।

समस्तपद

प्रत्येक

आजन्म

यथाशक्ति

साफ़-साफ़

रातोंरात

विग्रह

प्रति-एक

जन्म से लेकर

शक्ति के अनुसार

बिलकुल स्पष्ट

रात ही रात में

युग्म शब्द

‘युग्म’ का अर्थ है जोड़ा। जब एक शब्द अपने पर्याय, सहयोगी अथवा विलोम शब्द के साथ जोड़ा बनकर प्रयुक्त होता है तो उसे युग्म शब्द कहते हैं: जैसे- धन-दौलत, दाल-रोटी, पाप-पुण्य। ऐसे युग्म शब्दों में एक अतिरिक्त अर्थ निहित रहता है: जैसे- दाल रोटी का सामान्य अर्थ है दाल, सब्जी, रोटी आदि, किंतु इसका दूसरा अर्थ भरण-पोषण भी हो सकता है: जैसे- इस आदमी के सहारे दाल-रोटी चलती है।

युग्म शब्दों में चार भेद किए जा सकते हैं-

1. पर्याय या आपस में मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दों के युग्म-

संज्ञाएँ - अन्न-जल, बाल-बच्चे, आचार-विचार, कागज़-पत्र, जीव-जंतु, काम-काज, जान-पहचान, मार-पीट, देख-भाल।

विशेषण - हृष्ट-पुष्ट, सीधा-सादा, फटा-पुराना, भरा-पूरा, मोटा-ताजा, भूला-भटका।

सर्वनाम - जो कोई, सब-कुछ।

क्रियाएँ - लड़ते-झगड़ते, चलते-फिरते, गाते-बजाते, सुना-सुनाया, सोच-समझकर, हिलना-डुलना।

क्रियाविशेषण- ज्यों-त्यों करके, जहाँ-कहीं, बैठे-ठाले, जैसे-तैसे।

2. विलोम (विपर्यय) शब्दों के युग्म-

संज्ञाएँ - देश-विदेश, लेन-देन, जीवन-मरण, आगा-पीछा, उतार-चढ़ाव, धर्म-अधर्म, सुख-दुःख, गुण-दोष, जय-पराजय।

विशेषण - लंबा-चौड़ा, भला-बुरा, थोड़ा-बहुत, छोटे-बड़े, उलटा-सीधा।

क्रियाएँ - आना-जाना, जीना-मरना।

क्रियाविशेषण - आगे-पीछे, इधर-उधर, जहाँ-तहाँ, आर-पार।

3. कुछ युग्म सार्थक और निरर्थक शब्दों से बनते हैं-

कागज़-वागज़, भीड़-भाड़, चुप-चाप, हट्टा-कट्टा, गाली-गलौज, टाल-मटोल, आस-पास, आमने-सामने, इने-गिने, अता-पता, अड़ोसी-पड़ोसी, पूछ-ताछ, चुप-चाप, ढूँढ़-ढाँढ़।

4. कभी-कभी युग्म शब्दों के दोनों अंश निरर्थक होते हैं-

ऊटपटांग, अंटसंट, अनाप-सनाप, अंड-बंड, हक्का-बक्का।

पुनरुक्त शब्द

युग्म शब्द का एक प्रकार पुनरुक्त शब्द है। इसमें एक ही शब्द दो बार प्रयुक्त होता है। इसे द्विरुक्त शब्द भी कहते हैं। इसमें अर्थ में अतिशयता, भिन्नता, निरंतरता आदि का बोध होता है: जैसे- हँसी-हँसी, घड़ी-घड़ी (अतिशयता), रंग-रंग, देश-देश (भिन्नता) पाँव-पाँव, बूंद बूंद (रीति) छोटे-छोटे, हरी-हरी (एकजातीयता) घर-घर चलते-चलते, रोते-रोते (निरंतरता)।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण आदि शब्दों से पुनरुक्त शब्दों का निर्माण होता है: जैसे-

संज्ञा - गाँव-गाँव, भाई-भाई, गली-गली, रंग-रंग, आदमी-आदमी।

सर्वनाम - कौन-कौन, कोई-कोई, जो-जो।

विशेषण - बड़े-बड़े पके-पके, नए-नए, फीकी-फीकी, काले-काले।

क्रिया - हंसते-हंसते, देखते-देखते, आते-आते, जा-जाकर।

क्रियाविशेषण - धीरे-धीरे, ऊपर-ऊपर, नीचे-नीचे, हाय-हाय

कुछ अनुरणात्मक अथवा निरर्थक शब्दों की पुनरुक्ति से भी नए सार्थक शब्द प्राप्त होते हैं : जैसे-

संज्ञा - खटाखट, खटखट, गड़गड़, टनटन।

विशेषण - भड़भड़िया, खटपटिया, गड़बड़िया।

क्रिया - हिनहिनाना, बिलबिलाना, झनझनाना।

क्रियाविशेषण - दनादन, धड़ाधड़, झटपट।

कभी-कभी, पुनरुक्त शब्द के बीच में 'न', 'ही', 'तो' आदि निपात अथवा कोई परसर्ग आने से नए अर्थ का बोध होता है: जैसे-

कुछ-न-कुछ, कोई-न-कोई, आप-ही-आप, रंग-ही-रंग, मैं-ही-मैं, साथ-ही-साथ, और-तो-और, और-का और, घर-का-घर।

प्रश्न-अभ्यास

1. शब्द किसे कहते हैं ? शब्द वर्गीकरण के आधार बताइए।
2. स्रोत के आधार पर शब्दों को कितने भागों में बाँटा जाता है ? उदाहरण समझाइए।
3. देशज और आगत (विदेशी) शब्दों के भेद उदाहरण सहित बताइए।
4. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, आगत और देशज शब्द छाँटिए-

आँख, मयूर, आम्र, अखबार, वकील, मुहावरा, लोटा, विष, अँगूठा, खुशामद, दफ़्तर, बजट, बीमा, लाटरी, रवि।

5. रचना के आधार पर शब्द-भेद उदाहरण सहित समझाइए।
6. पारिभाषिक शब्द से क्या अभिप्राय है ? मानविकी और विज्ञान के पाँच-पाँच पारिभाषिक शब्द लिखिए।
7. अर्थ की दृष्टि से शब्दों के कौन-कौन से भेद हैं ? उदाहरण सहित बताइए।
8. विकारी और अविकारी शब्दों में सोदाहरण अंतर स्पष्ट कीजिए।
9. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-
अमृत, गंगा, कमल, चंद्र, जल, नदी, पृथ्वी, पवन।
10. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो विलोमार्थी शब्द लिखिए।
अनुराग, अमर, आयात, आस्तिक, कृत्रिम, दुर्जन, विजय।
11. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए।
अलि, कर, गुरु, धन, दंड, अनंत, मुद्रा।
12. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्दों का निर्माण कीजिए-
अन्, अन, अनु, अधि, उप, अभि, वि, सम्
13. निम्नलिखित प्रत्ययों से शब्दों का निर्माण कीजिए।
ता, त्व, ईय, इक, इयल, आई, आर, हार।
14. समास और संधि का अंतर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
15. निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह करते हुए समास का नाम बताइए-
शरणागत, पाप-पुण्य, अकालपीडित, पीतांबर, देशभक्ति, कमलनयन, मृगनयनी, आजन्म।
16. युग्म शब्द और पुनरुक्त शब्दों में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।

